International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

लोक नृत्य और जनजातीय कला रूपी विरासत के संरक्षण में जनजातियों की भूमिका (झारखण्ड राज्य के विशेष संदर्भ में)

संज्योति लकड़ा

सहायक प्राध्यापक, सिंड्रोंग महाविद्यालय, सिंड्रोंग, राँची विश्वविद्यालय, राँची.

Email Id:- sanjyotilakra85@gmail.com

सारांश

झारखण्ड आदिवासियों की जन्म भूमि है, यहाँ 32 प्रकार की आदिवासी जनजातियाँ पाई जाती है। जिनमें से 6 आदिम जातियाँ तथा बाकी आदिवासी जनजातियाँ है। जिनकी अपनी–अपनी संस्कृति एक कलाएँ हैं। यहाँ के आदिवासी मूल रूप से प्रकृति के पूजक होते हैं। वे प्रकृति की पूजा करते हैं, प्रकृति के गोद में जीवन– ज्ञापन करते हैं और प्रकृति ही उनके जीवन का आधार होता है। इस प्रकार प्रकृति से इनका विशेष लगाव होता है। यहाँ के आदिवासी जनजातियों की समाज में अलग पहचान होती है। इनकी लोक नृत्य एवं जनजातीय कला समाज के दूसरे लोगों से उनकी अलग पहचान बनाती है।झारखण्ड में कई लोक नृत्य हैं जिनमें –झुमइर, डमकच, फगुआ, फिरकल, पाइका और छऊ शामिल है। सभी लोक नृत्य उनके विभिन्न अवसरों एवं त्योहारों से संबधित होते हैं।उसी प्रकार जनजातीय कलाओं में – पैतकर, खोहबर, सोहराई, जादो पटिया, गंजू, बिरहोर, भुइया, कुर्गी, तुरी, मुंडा और घटवाल कला झारखण्ड की पांरपरिक और सांस्कृतिक कलाएँ हैं। जिनमें ये सोहराय और कोहबर कला झारखण्ड की दो प्रमुख लोक कलाएँ हैं जो मानव सभ्यता के विकास को दर्शाती है। इनकी जामीर एवं आस्था पूरी तरह से प्रकृति से जुड़ी होती है। ये सभी लोक नृत्य एवं जनजातीय कलाएँ झारखण्ड के जनजातीय रूपी विरासत को संरक्षण प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका निभाती हैं। इतना ही नहीं ये प्रकृति का संरक्षण एवं संर्वधन में भी अहम भूमिका निभाती है।ये जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। साथ ही साथ अपनी भाषाओं के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

शब्द कूंजी:– आदिवासी जनजाति, लोक नृत्य, कला, संस्कृति, संरक्षण

1.परिचयः–

झारखण्ड भारत के 28 राज्यों में से एक है, जिसकी स्थापना 15 नवम्बर 2000 ई0 को हुआ है, यह पहले बिहार राज्य के दक्षिणी हिस्से का एक भाग था। यह भारत के उत्तर– पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी अंक्षाशीय स्थिति 22 उत्तर से 25°18′30′′उत्तर तथा देशान्तरीय स्थिति 83°28′ पूर्व से 87°55′30′′ पूर्व तक है। इसका क्षेत्रफल 79714 वर्ग किलोमीटर है, जो भारत के सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्र का 2.42 प्रतिशत है। इस राज्य के उत्तर में बिहार, दक्षिण में उड़ीसा, पूरब में पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में छत्तीसगढ़ अवस्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 32988134 है जिसमें पुरुषों की जनसंख्या 16930315 तथा महिलाओं की जनसंख्या 16057819 है।

झारखण्ड पहाड़ियों तथा घाटियों से युक्त स्थल है। यहाँ घने वन पाए जाते हैं। अतः इसका नाम झारखण्ड पड़ा। यह प्राकृतिक विविधताओं से युक्त राज्य है। जहाँ विभिन्न प्रकार की भाषा, बोली, समाज, धर्म, जनजाति पाए जाते हैं। यहाँ 32 प्रकार की आदिवासी जनजातियाँ पाई जाती है। जिनमें– असुर, बैगा, बंजारा, बथुडी, बेदिया, बिंझिया, बिरहोर, बिरजिया, चीक बड़ाईक, चेरो, गोंड, गोडैकत, हो, करमाली, खड़िया, खरवार, खोन्द, किसान, कोरा, कोरवा, लोहरा, महली, माल पहाड़िया, मुंडा, उराँव, परहिया, संथाल, सौरिया पहाड़िया, सबर, भूमिज, कोल, कंवर इत्यादि हैं।झारखण्ड राज्य की अनुसूचित जनजातियों को प्रमुख एवं आदिम जनजातियों में वर्गीकृत किया गया है। यहाँ असुर, बिरहोर, कोरवा, परहिया, सौरिया पहाड़िया, माल पहाड़िया तथा सबर को आदिम जनजाति के समूह में रखा गया है जबकि बाकी सभी को अनुसूचित जनजाति के अन्तर्गत रखा गया है। 2011 के अनुसार झारखण्ड के आदिवासी जनजातियों की कुल जनसंख्या 8645042 है। झारखण्ड की ये आदिवासी एवं आदिम जनजातियाँ मुख्य रूप से गाँवों में निवास करती हैं। जिनकी सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था, राजनीतिक संगठन, धार्मिक विश्वास तथा सांस्कृतिक पहलू शहरी जीवन से बिल्कुल अलग होता है।

2.जनजातीय कला एवं नृत्य रूपी विरासत के संरक्षण में जनजातियों की भूमिकाः–

जनजाति वह मानव समुदाय है जो एक अलग निश्चित भूभाग में निवास करती है और जिनकी एक अलग संस्कृति, अलग रीति रिवाज, अलग भाषा होती है। तथा ये केवल अपने ही समुदाय में विवाह करती है। भारतीय संविधान में इन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया है। इनकी उत्पति प्रोटो ऑस्ट्रेलॉयड तथा मंगोल प्रजाति से मानी जाती है। अनेकता में एकता झारखण्डी संस्कृति की पहचान है। जो अलग अलग क्षेत्रों में रहते हुए भी अपनी विभिन्न संस्कृति के जरिये झारखण्डी संस्कृति को अलग एवं अनोखी पहचान देती है।झारखण्ड में निवास करने वाली प्रत्येक जनजातियों में कला, नृत्य, संगीत, शिल्प आदि का विपुल भण्डार है। कला एक ऐसी प्रकिया है, जिसके द्वारा मानव अपनी अनुभूतियों को स्वेच्छापूर्ण दूसरों तक सम्प्रेषित करता है। कला की आवश्यकता तथा महत्ता इस सत्य को रेखांकित करते हैं कि वह समाज, संस्कृति, इतिहास तथा परंपरा से जुड़कर मानव के उस नियति को स्पर्श करती है। झारखण्ड की जनजातीय कलाएँ आदिवासी समाज की सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक धरोहर है, जिन्हें जनजातीय समुदाय ने अपने शिल्प से मांजकर प्रौढ़ बनाया है। जनजातियों की सरल तथा सहज कला उनके दैनिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग होती है। झारखण्ड की जनजातियों ने अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाये रखने का भरसक प्रयास किया है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

झारखण्ड में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या, 2011 की जनगणना के अनुसार

कम संख्या	अनुसूचित जनजाति का नाम	जनसंख्या	राज्य की अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का प्रतिशत
1	असुर	22459	0.26
2	बैगा	3582	0.04
3	बंजारा	487	0.01
4	बाथुडी	3464	0.04
5	बेदिया	100161	1.16
6	भूमिज	209448	2.42
7	बिंझिया	14404	0.17
8	बिरहोर	10726	0.12
9	बिरिजिया	6276	0.07
10	चेरो	95575	1.11
11	चीक बड़ाईक	54163	0.63
12	गोंड	53676	0.62
13	गोरैत	4973	0.06
14	हो	928289	10.74
15	करमाली	64154	0.74
16	खड़िया	196135	2.27
17	खेरवार	248974	2.88
18	खोंड	221	0
19	किसान	37265	0.43
20	कोरा	32786	0.38
21	कोरवा	35606	0.41
22	लोहरा	216226	2.5
23	महली	152663	1.77
24	माल पहाड़िया	135797	1.57
25	मुंडा	1229221	14.22
26	उराँव	1716618	19.86
27	परहैया	25585	0.3
28	संथाल	2754723	31.86
29	सौरिया पहाड़िया	46222	0.53
30	सबर	9688	0.11
31	कवार	8145	0.09
32	कोल	53584	00.62
	कुल	**8645042**	**100**

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

झारखण्ड में अनुसूचित जनजातियों की जिलावार जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार

क्रम संख्या	जिलों के नाम	कुल जनसंख्या	पुरूष जनसंख्या	महिला जनसंख्या
1	गढ़वा	205874	104499	101375
2	चतरा	45563	23141	22422
3	कोडरमा	6903	3594	3309
4	गिरीडीह	238188	120646	117542
5	देवघर	180962	91012	89950
6	गोड्डा	279268	138510	140698
7	साहिबगंज	308343	153435	154908
8	पाकुड़	379054	186967	192087
9	धनबाद	233199	117256	115863
10	बोकारो	255626	129233	126393
11	लोहरदगा	262734	130814	131920
12	पूर्वी सिंहभूम	653923	325989	327934
13	पलामू	181208	92577	88631
14	लातेहार	331096	166427	164669
15	हजारीबाग	121768	60796	60972
16	रामगढ़	201166	101901	96265
17	दुमका	571077	282125	288952
18	जामतारा	240489	120035	120454
19	राँची	1042016	520582	521434
20	खूँटी	389626	193710	195916
21	गुमला	706754	352514	354240
22	सिमडेगा	424407	211546	212861
23	पश्चिमी सिंहभूम	1011296	500949	510347
24	सरायकेला	374642	187149	187493
	कुल	**8645042**	**4315302**	**4329740**

स्रोतः–Censusindia.gov.in Table A-11 (Appendix)

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

झारखण्ड में जनजातीय कला के रूप में कई कलाएँ प्रचलित हैं जो निम्नलिखित हैं–

(1) सोहराई कला:–

इस कला में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है, जो स्थानीय तौर पर पाये जाने वाली सफेद मिट्टी, काली मिट्टी तथा गोबर का प्रयोग होता है। इस कला में कंघी का प्रयोग होता है। यह कला मुख्य रूप से दिवाली के अवसर पर उकेरी जाती है। दीवाली धन– धान्य की वृद्धि का पर्व माना जाता है। इस कला में प्रयुक्त गोबर ईश गणेश के प्रतीक के रूप में माना जाता है। गणेश के साथ–साथ लक्ष्मी की पूजा भी शुभ माना जाता है। सोहराई कलाकृतियों को भारत कि बाहर भी प्रचारित किया गया है ताकि विदेशों में भी इस कला को पहचान मिल सके। यदि सोहराई कला को समुचित ढंग से प्रोत्साहित किया जाए तो सह कला भी विश्वविख्यात हो सकती है।

(2) कोहबर कला:–

यह हजारीबाग जिला के बड़कागाँव प्रखण्ड के बादाम क्षेत्र में काफी प्रचलित है। यह शैल चित्र बादाम क्षेत्र में स्थित इस्को पहाड़ियों की गुफाओं में उत्कीर्ण है। इन चित्रों में वन्य पशु– पक्षी, मानव आकृति, धार्मिक प्रतीक, लैटेराइट पत्थरों से उकेरे गये हैं। इस कला को प्राचीन काल के राजाओं द्वारा प्रश्रय देने तथा प्रोत्साहन देने का काफी प्रयास किसा गया था। पुरानी मान्यताओं के आधार पर दीवारों पर उत्कीर्ण कलाकृतियों को देखकर यदि पूजा की जाए तो अंसभव एवं असाध्य कार्य भी आसानी से पुरे हो जाते हैं। अतः इन्हीं कारणों से इस क्षेत्र के प्रत्येक घरों नेंयह भित्ति चित्र प्रचलित हो गयी है। यह कला मुख्य रूप से विवाहोत्सव के अवसर पर प्रयोग किया जाता है।

(3)जादो पटिया

यह चित्रकला झारखण्ड की संथाल जनजाति के बीच हिन्दू धर्म से प्रभावित एक प्राचीन लोक चित्रकला है, जो जनजातीय समाज की सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक यादों को उकेरती है। जादो पटिया चित्र लोक कलाकारों का एक जदुपटिया जाति, जो झारखण्ड की पिछड़ी जाति है, उनके द्वारा बनाये जाते हैं। यह चित्रकला इनके आजीविका का साधन ।भी है। ये संथाल के गाँवों में घूमघूकर इस चित्रकला को बनाते हैं तथा दक्षिणा के तौर पर दिये गये दान से अपना जीवन– ज्ञापन करते हैं। जादो पटिया चित्र पुराने कपड़े का कागज के टुकड़ों पर प्राकृतिक रंगों से विषय वस्तु के कमानुसार चित्रण किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से लाल, हरा, भूरा, पीला, नीला एवं काले रंग का प्रयोग होता है। ये रंग प्रायः रही पत्तियों के रस, पील, हल्दी से बनाये जाते हैं, जो एक विशेष प्रकार की पत्थर से घिसकर बनाये जाते हैं। इसमें बबूल का गोंद भी मिलाया जाता है।

(4) पैतकर रंग चित्र:–

ये रंग चित्र झारखण्ड के पूर्वी सिंहभूम जिला के पैतकर समुदाय द्वारा तैयार किये जाते हैं। यह भारत के प्राचीनतम आदिम चित्रकारियों मेंसे एक है। इस रंग चित्र के माध्यम से मृत्यु के बाद के जीवन के प्रकरण को प्रदर्शित किया जाता है। यह रंग चित्र जादो पटिया चित्रकला के साथ कुछ समानता रखता है। इस रंगचित्र को बनाने वाला कलाकार कपड़े या कागज पर सिंदूर तथा प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करता है। सुईया बकरे के बाल की सहायता से चित्र बनाये जाते हैं। आजकल अम्बादुबी तथा धालभूम गढ़ के कला मंदिर द्वारा उत्पादित किये जा रहे हैं।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

(5) गोदना चित्र:–

गोदना झारखण्ड की जनजातियों में प्रचलित एक कला है। इसमें जनजातीय युवतियाँ एवं महिलाएँ अपने ललाट, गला, छाती, बांह, हाथ, पैर इत्यादि में आभूषण, फूल, पक्षी, पेड़–पौधे, जानवर, गोत्र चिन्ह इत्यादि के गोदना गोदवाती हैं। संथाली युवतियाँ युवावस्था में पर्दापण करने के समय खोदनी द्वारा अपन शरीर पर विभिन्न प्रकार के चित्र गोदना के रूप में अंकित कराती हैं।झारखण्डी जनजातीय समाज में गोदना के संदर्भ में ऐसा विश्वास प्रचलित है कि शरीर को गोदनक से गुदे गये जगह पर किसी प्रकार का रोग या घाव नहीं होता है। संथाल लड़कों में सिखा गोदवाने का रिवाज है, जो उनके गोत्र की पहचान होती है। महिलाओं में यह अंधविश्वास प्रचलित है कि गोदना गुदवाने से प्रसव वेदना को सहन करना आसान हो जाता है। गोदना गोदने से पूर्व विभिन्न प्रकार की पेड़– पौधों की पत्तियों, फल, फूल तथा छाल से लेप तैयार किया जाता है। चित्र के अनुसार इस लेप को शरीर के अंग पर लगाया जाता है, फिर खोदनी सुईयों द्वारा शरीर में चुभोया जाता है, तत्पश्चात गोदे गये शरीर के हिस्से पर हल्दी तथा अन्य चूर्ण औषधी के रूप में लगायी जाती है। तीन– चार दिनों बाद इसे धो दिया जाता है, लेकिन जनजातीय समाज में इस गोदना का प्रचलन धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। वर्तमान समय में गोदना गुदवाने की नयी तकनीक का विकास हुआ है, इसमें युवक बड़ी शौक से अपने शरीर, हाथ, गले, कान के नीचे, पीठ पर गुदवाते हैं।

(6) भित्ति चित्र:–

झारखण्ड की जनजातियाँ पर्व–त्यौहार तथा विवाह के पावन अवसर पर अपने घरों की सफाई करने के साथ दिवारों पर विभिन्न प्रकार के चित्र भी बनाती है। इसके लिए काली मिट्टी, सफेद मिट्टी, पीली मिट्टी तथा गेरू का प्रयोग किये जाते हैं। ये चित्रकारियाँ प्रायः महिलाओं द्वारा बनाई जाती है। ये चित्रकारियाँ प्रायः माघे, सरहुल, सोहराय, बन्धन इत्यादि पर्व– त्योहार के अवसर पर विभिन्न प्रकार के फूल, फल, पशु ,पक्षी, पौधे, गोत्र चिन्ह इत्यादि के रूप में चित्रित किये जाते हैं। इस चित्रकला में संथाल जनजाति ज्यादा निपुण होते हैं। मुंडा जनजाति के बीच कृषि यंत्र के चित्र दिवारों पर बनाने की परम्परा रही है। सबर जपजाति के बहच भित्ति चित्र के रूप में गोत्र चिन्ह, कृषि कार्य, शिकार इत्यादि से जुड़े चित्र बनाने का प्रचलन रहा है।

(7) काष्ठ कला:–

काष्ठ कला झारखण्डी जपजातीय संस्कृति का अहम हिस्सा रहा है।झारखण्ड की जनजातियों द्वारा काष्ठ निर्मित कलाकृतियाँ, बरतन तथा पूजा हेतु मूर्तियाँ जनजातियाँ काष्ठ उत्कीर्णन हेतु अनुपम शिल्प विधि का प्रयोग करती है। इसके लिए गम्हार, सागवान की लकड़ियाँ, तैलीय पेंट, मोम पॉलिश इत्यादि प्रयोग में लाए जाते हैं।झारखण्ड की बिरहोर जनजाति काष्ठ शिल्प में सिद्धहस्त रही है। यह जनजाति काष्ठ से विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ जैसे– ओखल, समाट, कठौत, कंघी इत्यादि बनाती है। बिरजिया जनजाति के सदस्य बाँस शिल्प में प्रवीण होती है। महली जनजाति के सदस्य बाँस से टोकरी, सूप, कुमनी, हड़िया छकनी इत्यादि बनाते हैं।

(8) डॉकरा शिल्प:–

झारखण्ड की एक महत्वपूर्ण आदिम शिल्प है। झारखण्ड के हजारीबाग तथा खूँटी जिले में मलहोर जाति के बीच यह शिल्प कला आज भी जीवित है। मलहोर जाति के सदस्य पीतल, कांसा, मोम इत्यादि कच्चे सामग्रियों का इस्तेमाल कर विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ जैसे बरतन, मूर्तियाँ, फूलदानी, पैला, हाथी, घोड़ा, हिरण इत्यादि डॉकरा शिल्प के अन्तर्गत तैयार किया जाता है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

इसके अलावे अल्पना चित्र, प्रतीक चित्र,जुट शिल्प तथा टेराकोटा शिल्प जैसी कई कलाएँ झारखण्ड के जनजातियों में पाई जाती हैं।

जनजातीय नृत्यः–

जनजातीय नृत्य जनजातीय समूहों द्वारा किये जाने वाले नृत्य हैं। ये जनजाति की अनूठी परंपराओं और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हुए एक क्षेत्र से दुसरे क्षेत्र में भिन्न होते हैं। ये नृत्य जनजाति के जीवन में महत्वपूर्ण मील के पत्थर या घटनाओं को चिन्हित करने के लिए किये जाते हैं।झारखण्ड के लोक नृत्य इसकी जीवंत संस्कृति और परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं।झारखण्ड राज्य के विभिन्न लोक नृत्य हैं जो फसल के मौसम, त्योहार और सामाजिक समारोहों के दौरान किये जाते हैं। एक झारखण्डी लाकोक्ति के अनुसार चलना ही नृत्य है तथा बोलना ही संगीत। जनजातीय लोक गीतों से नृत्य प्रेरित होते हैं। लोक गीत के आभाव में जनजातीय नृत्यों की कल्पना नहीं की जा सकती।झारखण्ड के जनजातीय समाज में अनेक प्रकार के लोक गीत गाये जाते हैं, जैसे– सामान्य गीत, संस्कार गीत, पर्व गीत, विवाह गीत, नृत्य गीत, ऋतु गीत इत्यादि। इन लोकगीतों में श्रृंगार, भक्ति, प्रकृति, वात्सल्य, शौर्य करूणा तथा हास्य का समावेश होता है। चक्की तथा ढेकी चलाते समय, धान रोपणी समय तथा फसलों की कटनी के अवसर पर लोकगीत गाये जाते हैं। इनमें से कुछ गीत मात्र पुरूषों के लिए तो कुछ गीत महिलाओं के लिए होती है। लाहर, अंगनई, उमकच, झांझाइन, विवाह इत्यादि गीत महिलाएँ गाती हैं। उराँव जनजाति के बीच लोकगीतों का अपार भंडार है। मुंडा महिलाओं के कंठ स्वर मधुर तथा सुरीले होते हैं। संथाल जनजाति नाच– गान के बड़े शौकीन होते हैं। हो महिलाएँ छाते को कमर से बाँधकर नाचने की कला में माहिर होती हैं।

झारखण्डकी जनजातियों द्वारा नृत्य प्रायः अखाड़ा में आयोजित किये जाते हैं। कुछ अवसरों पर घर के आंगन की खुली जगह या जतरा या मेले में भी नृत्य किये जाते हैं। इनके बीच प्रचलित सामूहिक नृत्य सामूहिक बोध के प्रतीक हैं। कुछ नृत्य धार्मिक स्थलों जैसे जाहेर या सरना स्थल पर किये जाते हैं। झारखण्ड में लोक नृत्य शैली एक अनोखी परम्परा है, जो अपने लयबद्ध पैटर्न, पारंपरिक वेशभूषा और लोक संगीत के साथ पहचानी जाती है। इन्हें अवसर त्योहारों, अनुष्ठानों और सामाजिक बंध अन्यास और कहानी कहने और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में कार्य करते हैं।झारखण्ड के जनजातीय गीत एवं नृत्य में वाद्ययंत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। झारखण्ड की जनजातियों के बीच ढोलक, ढांक, नगाड़ा, मांदर, मंदीर, ठचका, फेचका, रेगड़ा, सेकोच, घाघर, तिरियो, शहनाई, बाँसुरी, केंदरा, झाल, करताल, सारंगी तथा घुंघरू इत्यादि वाद्ययंत्रों का प्रचलन है। उराँव जनजाति में मांदर, ढोलकी, झाल, करताल इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। मुंडा जनजातियों में मांदर, नगाड़ा, ढोल, बाँसुरी इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। खड़िया जनजाति में मांदर का आकार बड़ा तथा लंबा होता है। किंतु आजकल झारखण्ड की परम्परागत जनजातीय वाद्ययंत्र विस्थापित होते जा रहे हैं।

झारखण्ड की जनजातीय कलाएँ

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

झारखण्ड की जनजातीय कलाएँ

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

(1) झुमाइर नृत्यः–

यह नृत्य झारखण्ड का एक प्रसिद्ध लोक नृत्य है, जो फसल के मौसम और आदिवासी समुदायों के आनन्दमय जीवन का उत्सव है। इस नृत्य में नर्तक एक– दूसरे का हाथ पकड़कर गोलाकार पैटर्न में नाँचते हैं। इस नृत्य में ढोल, करताल, बाँसुरी और सारंगी जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है। यह खोरठा, कुरमी, पंचपरगनिया और नागपुरी लोगों द्वारा फसल के मौसम और त्योहार के दौरान किया जाता है।

(2) छऊ नृत्यः–

यह लोक नृत्य अपनी शक्तिशाली चाल और विशिष्ट मुखौटों के लिए प्रसिद्ध है। यह नृत्य मुख्य रूप से खुले मैदान में की जाती है। इस नृत्य का मुख्य आकर्षण का केन्द्र मुखौटा होता है। प्रत्येक मुखौटा विभिन्न पात्रों तथा देवताओं की आकृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस नृत्य के माध्यम से हमला करना या शिकार करना को दर्शाता है। यह नृत्य शैली हर खुशी के अवसर पर की जाती है।झारखण्ड के छऊ नृत्य को यूनेस्को की अमूर्त विरासत सूची 2010 में शामिल किया गया था। इस नृत्य को झारखण्ड के पूर्व राज्य सरायकेला के शाही परिवार द्वारा संरक्षित किया गया है।

(3) पाइका नृत्यः–

यह एक अनूठी नृत्य शैली है जो मार्शल आर्ट को स्थानीय नृत्य चरणों के साथ जोड़ती है। यह नृत्य शैली पुरूषों द्वारा की जाती है इसमें उच्च स्तर की मार्शल आर्ट शामिल होती है जिसके लिए शारीरिक उत्साह और आंतरिक साहस की आवश्कता होती है। इस नृत्य में नर्तक रंग– बिरंगे पोशाक पहनते हैं तथा उनके एक हाथ में तलवार तथा दूसरे हाथ में ढाल होती है। इस लोक नृत्य का संगीत ढाक, शहनाई और नरसिंह वाद्ययंत्रों से होता है। वर्तमान समय में पाइका प्रदर्शन शादियों और त्योहारों के दौरान होता है।

(4) डोमकच नृत्यः–

यह लोक नृत्य शादी समारोह से संबधित नृत्य है। यह झारखण्ड में छोटानागपुर पठार क्षेत्र में नागपुरी भाषी लोगों द्वारा किया जाता है। दूल्हे और दुल्हन के परिवार के महिला और पुरूष सभी प्रमुख विवाह समरोहों के दौरान यह नृत्य करते हैं। वे एक दूसरे का हाथ पकड़कर इस विशेष नृत्य को करने के लिए एक अर्ध–वृत्त बनाते हैं और गाने के बोल व्यंग्यपूर्ण और आनंद से भरे होते हैं।

(5) करम नृत्यः–

करम नृत्य का नाम पवित्र वृक्ष कदम्ब से आया है। लोग कदम्ब वृक्ष को समृद्धि और सौभाग्य का अग्रदूत मानते हैं। यह नृत्य कदम्ब वृक्ष की पूजा और रोपण का प्रतीक है। इसमें कुवांरी लड़कियाँ उपवास रखकर अपने होने वाले भावी पति के लिए ईश्वर से कामना करती हैं। कदम्ब के डाली को काटकर लाया जाता है उसके चारों ओर नृत्य की जाती है। गाँव का पहान लोगों का करम राजा का कहानी सुनाता है। रात भर करम वृक्ष की रक्षा की जाती है। दूसरे दिन बड़ी धूमधाम से करम डाली का विसर्जन करते हैं। इस दिन करम के डाली को लोग अपने खेतों में गाड़ते हैं ,ऐसा विश्वास किया जाता है कि ये डालियाँ उनके फसलों को हानि पहुँचाने वाली कीड़े–मकोड़ों से रक्षा करती है। इस नृत्य में मांदर, नगाड़ा, घंटा, करताल आदि वाद्ययत्रों का प्रयोग किया जाता है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

(6) फगुआ नृत्यः–

यह झारखण्ड का एक लोकप्रिय लोक नृत्य है, जो होली के त्योहार पर की जाती है। इसमें फगुआ (सेमल) की डाली का काटकर गाँव के बाहरी सिमाने के बाहर रखा जाता है तथा उसे जलाया जाता है । ऐसा धार्मिक मान्यता है कि गाँव पर किसी बाहरी शक्ति का प्रकोप न हो तथा गाँव विभिन्न प्रकार की बिमारी, महामारी एवं अन्य बुरी शक्तियों से सुरक्षित रहें। यह नृत्य लोगों में काफी उत्साह भर देता है। इस नृत्य में पुरूष तथा महिलाएँ दोनों ही भाग लेती हैं। मांदर, ढोल, बंसी इस नृत्य के मुख्य वाद्ययंत्र हैं। नर्तक एक दूसरे पर गुलाल भी लगाते हैं। इस नृत्य में महिला एवं पुरूष सखुआ का फूल बाल तथा कानों में खोंसते हैं। घर– घर समूह में जाकर नृत्य की जाती है।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

झारखण्ड की जनजातीय नृत्य

झारखण्ड की जनजातीय नृत्य

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

4. उद्देश्यः–

झारखण्ड की कला और नृत्य स्थानीय लोगों के जीवन से जुड़े हैं। ये उनकी संस्कृति को दर्शाते हैं। अतः झारखण्डी कला और नृत्य के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- संस्कृति से जुड़ाव अथवा लगाव का अहसास कराना।
- बीते हुए समय की यादों को ताजा करना।
- लोगों में आपसी सौहार्द को बढ़ावा देना
- पारम्परिक उत्सवों को आपसी सौहार्द पूर्वक मनाना।
- पारम्परिक वस्त्र एवं आभूषणों से अवगत कराना।
- पारम्परिक वाद्ययंत्रों से लोगों को अवगत कराना।
- पारम्परिक धार्मिक अनुष्ठानों से लोगों को अवगत कराना।
- पौराणिक कथाओं से संबंधित तथ्यों की ओर ध्यान आकृष्ट कराना।
- आदिवासी लोगों के विचार एवं भावनाओं को व्यक्त कराना।

5. शोध विधितंत्रः–

- द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग।
- विभिन्न लेखकों द्वारा लिखे गये जनजातीय कला एवं संस्कृति से जुड़ी पुस्तकों का अध्ययन।
- विभिन्न आलेखों एवं शोध का अध्ययन।
- साक्षात्कार विधि का प्रयोग।
- आँकड़ों का विश्लेषण विभिन्न आरेखों द्वारा।
- जनजातीय कला एवं नृत्य से संबंधित फोटोग्राफ का संकलन।

6. जनजातीय कला एवं नृत्य से जुड़ी भावी चुनौतियाँः–

- झारखण्ड की आदिवासी जनजातियाँ आज भी सामाजिक संपर्क स्थापित करने में अपने आप को असहज महसूस करती है। इससे शिक्षा, मनोरंजन, स्वास्थ्य तथा पोषण से संबंधित सुविधाओं से आज भी वंचित हैं। आज भी कई ऐसी जनजातियाँ जैसे सबर, सौरिया पहाडिया, माल पहाडिया विकास की दौड़ में काफी पीछे रह गये हैं।
- आज भी जनजातीय समुदायों का एक बड़ा हिस्सा निरक्षर है जो अपनी भाषा को छोड़ अन्य भाषा को समझ नहीं पाते हैं। जिससे ये सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं, अतः ये काफी पिछड़े हैं।
- यहाँ की जनजातीय समाज आज भी आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई है। परिवार के मुख्य अपनी आर्थिक तंगी के कारण अपने बच्चों को पढ़ा लिखा नहीं पाते हैं, जिससे उन्हें मजबूरन मानव तस्करी, वेश्यावृत्ति जैसे सामाजिक बुराईयों का शिकार होना पड़ रहा है।

- जनजातीय समुदाय मूल रूप से वनों में निवास करती है। वर्तमान समय में उनके आवासों का हनन हो रहा है। ये जनजातियाँ न सिर्फ वनों में निवास करती है, बल्कि उनकी अर्थव्यवस्था पूरी तरह से वन पर ही निर्भर है। अतः ऐसी परिस्थिति में उनके आवास पर अतिक्रमण हो रहा है साथ ही साथ उनके जीवन –ज्ञापन का साधन भी सिमटता जा रहा है तथा उनके पारिस्थितिक तंत्र का भी क्षति हो रहा है।
- झारखण्ड की कई आदिवासी जनजातियाँ अपनी पहचान को खोते जा रहे हैं जिसका कारण पश्चिमी सभ्यता को अपनाना है। ये अपनी भाषा, संस्कृति, धार्मिक विश्वास सभी को भूलते चले जा रहे हैं। जिसका विपरीत प्रभाव निश्चित रूप ये आने वाली पीढ़ी पर पड़ेगी।
- आज कुछ आदिवासी जनजातियाँ अंर्तविवाह को अपनाकर अपनी पहचान और संस्कृति को धुमिल करने में पीछे नहीं है। जिससे उनके समाज एवं संस्कृति का हनन हो रहा है।
- आज भी पहाड़ों एवं जंगलों में निवास कर रहे जनजातियाँ अपनी रुढ़ीवादी परम्परा, धार्मिक अंधविश्वास के कारण खुद को मुख्य धारा से जोड़ नहीं पा रही है अतः आज भी वे उसी पुरानी जीवन पद्यति को अपनाए हुए है।

निष्कर्षः–

झारखण्ड में निवास करने वाली आदिवासी एवं आदिम जनजातियाँ अपनी संस्कृति के लिए काफी सजग है। ये आदिवासी जनजाति आज भी अपनी संस्कृति की पहचान को बनाये रखी है। इनकी संस्कृति के अन्तर्गत कला, नृत्य, पर्व–त्योहार, वेश–भूषा तथा भाषा सम्मिलित है। इनकी कला एवं नृत्य रूपी विरासत आज भी जीवित है। आधुनिकता के इस दौर में भी ये आदिवासी जनजातियाँ अपने इस विरासत को सम्भाल कर रखी है, जो आने वाली पीढ़ी के लिए संरक्षित विरासत की तरह है। कुछ आदिवासी समाज में ये विरासत धुमिल होती जा रही है, जिसे बचाने की अति आवश्यकता है। इसके लिए भारत सरकार तथा राज्य सरकार दोनों ही प्रयासरत है। आज समस्त भारत में आदिवासी गौरव दिवस का आयोजन हो रहा है, जिसमें आदिवासियों को एक मंच प्रदान किया जाता है, जिसके सामने पुरे भारतीय आदिवासी समाज एकत्रित होकर अपनी संस्कृति की एकता का परिचय देते हैं। इसी प्रकार समय–समय पर झारकापट मेलों का आयोजन किया जाता है, जहाँ आदिवासी कलाओं की विभिन्न झलक देखने को मिलती है। इतना ही नहीं झारखण्ड के कई क्षेत्रों में आज भी आदिवासी अपनी पारम्पारिक उद्यानों को अपनाए हुए है, जो कहीं न कहीं उनकी संस्कृति के प्रति लगाव को प्रदर्शित करती है। इस प्रकार झारखण्डी आदिवासी अपनी संस्कृति रूपी धराहर को संरक्षण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1.(डॉ) शर्मा, विमला चरण (2006): झारखण्ड की जनजातियाँ, क्राउन पब्लिकेशन, राँची
2. (डॉ) वर्मा, उमेश कुमार (2009): झारखण्ड का जनजातीय समाज, सुबोध ग्रन्थमाला, पुस्तक पथ राँची
3. भूषण विद्या (2000): समाज संस्कृति और विकास, दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली
4. (डॉ), तिवारी, राम कुमार (2004): झारखण्ड की रूपरेखा, शिवांगन पब्लिकेशन, राँची
6. (डॉ) तिवारी, राम कुमार (2001): झारखण्ड का भूगोल, राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली
7. Census Handbook of Jharkhand 2011
8. Censusindia.gov.in Table A- 11(Appendix)